3

राजकुमार सिद्धार्थ

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने बताया है कि मारने वाले से बचाने वाला अधिक बलवान होता है।

पुराने समय की बात है। कपिलवस्तु के राजकीय उद्यान में एक राजकुमार टहल रहा था। अभी वह छोटा ही था, पर था बहुत समझदार। उसका नाम था–सिद्धार्थ।

सिद्धार्थ को प्रतिदिन राजउद्यान में आकर प्रकृति का आनंद लेना अच्छा लगता था। इतने सुंदर हरे-भरे पेड़, रंग-बिरंगे फूल, सब ओर प्रकृति की निराली सुंदरता को देख-देखकर राजकुमार सिद्धार्थ खुश हो जाता। सोचता, "अहा! भगवान ने प्रकृति को कितना सुंदर बनाया है!"

राजकुमार सिद्धार्थ इन्हीं विचारों में खोया था तभी उसे एक दर्दनाक आवाज़ सुनाई दी। उसे समझते देर नहीं लगी कि यह किसी हंस की आवाज़ है। पर हंस की आवाज़ में इतना दर्द क्यों है?

राजकुमार सिद्धार्थ दौड़ा-दौड़ा उसी जगह पर गया, जहाँ से आवाज़ आई थी। उसने देखा कि एक हंस तीर से घायल होकर पड़ा है। उसके शरीर से खून बह रहा है। वह सुंदर और उजला हंस दर्द से बुरी तरह तड़प रहा था।

यह देखकर राजकुमार सिद्धार्थ को बहुत दुख हुआ। उसने प्यार से हंस को गोद में उठाया। धीरे-से उसके अंदर घुसा हुआ तीर

शिक्षण-संकेत

- महात्मा बुद्ध के बचपन का एक मर्मस्पर्शी प्रसंग यहाँ एक सुंदर कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। देवदत्त ने हंस पर तीर चलाया और सिद्धार्थ ने उसे बचाया। हंस बचाने वाले के पास रहा। राजा के इस न्याय के पीछे करुणा और ममता की गहरी भावना छिपी हुई है। ईश्वर ने असंख्य भोले-भाले जीवों को बनाया है। उन्हें मारने से नहीं, बल्कि उन्हें प्यार देकर ही हमें जीवन का सच्चा सुख मिलता है। इस कहानी के जरिए बच्चों के मन में जीव-जंतुओं के लिए सच्चा प्यार और करुणा का भाव पैदा करें।
- उन्हें अपने प्रिय पशु-पक्षियों पर कुछ पंक्तियाँ लिखने के लिए भी प्रोत्साहित करें।

निकाला। फिर साफ़ पानी से उसका घाव धोया। प्यार से हंस के शरीर पर हाथ फेरा। हंस की आँखों में राजकुमार सिद्धार्थ के लिए गहरा प्यार था, मानो वह मन-ही-मन उसे धन्यवाद दे रहा हो।

राजकुमार सिद्धार्थ मरहम-पट्टी के लिए हंस को राजमहल में ले जाने लगा। तभी उसका चचेरा भाई देवदत्त वहाँ आ गया। उसके हाथ में धनुष था। वह बोला, "इस हंस को मेरा तीर लगा है, यह मेरा है। इसे मुझे दे दो।"

सिद्धार्थ ने कहा, "तुमने तो इसे मारना चाहा था, फिर यह तुम्हारा कैसे हुआ?"

देवदत्त बोला, "लेकिन शिकार पर उसी का हक होता है, जो उसका शिकार करता है।"

सिद्धार्थ बोला, "इन भोले-भाले जीवों का शिकार करने से तुम्हें क्या मिलता है? देखो, इस हंस की आँखों में कितना दर्द है! इन भोले जीव-जंतुओं को भगवान ने बनाया है। वह इस बात से कभी खुश नहीं हो सकता कि कोई इन्हें बिना बात के मारे।"

"ठीक है, तो मैं राजदरबार में तुम्हारी शिकायत करूँगा।" कहकर देवदत्त गुस्से से पैर पटकता हुआ चला गया।

देवदत्त दरबार में पहुँचा। पीछे-पीछे घायल हंस को गोद में लिए सिद्धार्थ भी चला आया। वहाँ पहुँचकर देवदत्त ने राजा से कहा, "महाराज, मुझे न्याय चाहिए। मैंने इस हंस पर तीर चलाया, इसलिए यह मेरा है। सिद्धार्थ इसको मुझे नहीं दे रहा है।"

राजा ने सिद्धार्थ की ओर देखकर पूछा, "तुम हंस देवदत्त को क्यों नहीं दे रहे हो?"

सिद्धार्थ बोला, "देवदत्त ने इसे मारना चाहा, जबकि मैंने इसे बचाया है। तो फिर यह हंस देवदत्त को कैसे दे दूँ? वह इसे मार देगा।"

यह सुनकर राजा थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गए। फिर बोले, "मारने वाले से बचाने वाले का हक अधिक है। इसलिए यह हंस सिद्धार्थ के ही पास रहेगा।"

सिद्धार्थ की आँखों में अनोखी खुशी की चमक थी। उसने राजमहल में ले जाकर खुद अपने हाथों से हंस की मरहम-पट्टी की। थोड़े दिनों बाद हंस फिर से उड़ने लगा। वह उड़कर कभी राजमहल की छत पर जा बैठता, तो कभी दूर पेड़ों पर। लेकिन थोड़ी ही देर में वह फिर सिद्धार्थ के पास आ जाता। सिद्धार्थ तो हंस को देखते ही बहुत खुश हो जाता था।

सिद्धार्थ को लगता कि वह कह रहा है, "तुम में दया और ममता है। भगवान ऐसे ही लोगों को पसंद करते हैं।"

शिक्षा मारने वाले से बचाने वाला बलवान होता है।

शब्द-पोटली

चचेरा	– चाचा का बेटा	दर्द	– पीड़ा	खून	– रक्त
दर्दनाक	– दर्द से भरा हुआ	साफ़	– स्वच्छ	खुशी	– आनंद
राजकीय उद्यान	– शाही बगीचा	उजला	– सफ़ेद	हक	– अधिकार

अभ्यास

संकलित मूल्यांकन

पाठ बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

मौखिक

(क) राजकुमार का क्या नाम था?

(ख) राजकुमार सिद्धार्थ को किसकी आवाज़ सुनाई दी?

(ग) देवदत्त कौन था?

(घ) राजा ने हंस किसको दिया?

लिखित

(क) राजकुमार सिद्धार्थ दौड़ा-दौड़ा कहाँ गया?

(ख) राजकुमार सिद्धार्थ ने हंस के पास पहुँचकर क्या किया?

(ग) देवदत्त ने राजा से क्या कहा?

(घ) इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

2. सही विकल्प पर ✓ लगाइए:

(क) राजकीय उद्यान में कौन टहल रहा था?

राजकुमार ☐ राजकुमारी ☐ राजा ☐ रानी ☐

(ख) हंस के तीर किसने मारा था?

राजा ने ☐ देवदत्त ने ☐ सिद्धार्थ ने ☐ मंत्री ने ☐

(ग) अंत में हंस किसे दिया गया?

प्रजा को ☐ मंत्री को ☐ सिद्धार्थ को ☐ देवदत्त को ☐

3. ऐसा किसने, किससे कहा?

वाक्य	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "इस हंस को मेरा तीर लगा है, यह मेरा है। इसे मुझे दे दो।"	_____	_____
(ख) "तुमने तो इसे मारना चाहा था, फिर यह तुम्हारा कैसे हुआ?"	_____	_____
(ग) "मारने वाले से बचाने वाले का हक अधिक है। इसलिए यह हंस सिद्धार्थ के ही पास रहेगा।"	_____	_____
(घ) "शिकार पर उसी का हक होता है, जो उसका शिकार करता है।"	_____	_____

3. रिक्त स्थान भरिए:

(क) कपिलवस्तु के _____ में एक राजकुमार टहल रहा था।

(ख) तभी उसे एक _____ आवाज़ सुनाई दी।

(ग) राजकुमार सिद्धार्थ _____ के लिए हंस को राजमहल ले जाने लगा।

(घ) देवदत्त _____ में पहुँचा।

(ङ) सिद्धार्थ की आँखों में _____ खुशी की चमक थी।

भाषा बोध

1. समान तुक वाले शब्द लिखिए:

टहल _____ प्रकृति _____ सुंदर _____

दरबार _____ घाव _____ हंस _____

2. नीचे दिए गए शब्दों को उनके अर्थ से मिलाइए:

आवाज़	जल
पानी	प्रेम
प्यार	ध्वनि
ज़ल्दी	स्वच्छ
साफ़	दर्द
पीड़ा	शीघ्र

3. निम्नलिखित शब्दों को अनुस्वार (ं) या अनुनासिक (ँ) लगाकर पूरा करें:

सुदर	_____	बिरगे	_____	आखो	_____
पहुचा	_____	अदर	_____	जहा	_____

4. निम्नलिखित वर्गों के लिए दो-दो नाम लिखिए:

दिनों के नाम – सोमवार	_____	_____
महीनों के नाम – जनवरी	_____	_____
फलों के नाम – आम	_____	_____
शहरों के नाम – दिल्ली	_____	_____

रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक अभ्यास

- निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा लिखिए:

कपिलवस्तु	उद्यान	सिद्धार्थ	दर्दनाक
_____	_____	_____	_____
धन्यवाद	देवदत्त	राजदरबार	शिकायत
_____	_____	_____	_____

चित्रात्मक कार्य

- तीर लगा हुआ हंस का चित्र बनाकर उसमें रंग भरो।

क्रियात्मक कार्य

1. तुम्हारा जानवरों के प्रति कैसा व्यवहार है? स्पष्ट कीजिए।
2. अगर तुम सिद्धार्थ की जगह होते तो हंस की मदद कैसे करते?

उच्च बौद्धिक स्तरीय प्रश्न (HOTS)

- राजकुमार सिद्धार्थ की तरह वह कौन-सा बालक था, जिसने एक भयंकर सर्प को पकड़कर जंगल में छोड़ दिया और उस सर्प का जीवन बचाया? वह बालक बड़ा होकर क्या बना? उसने कौन-से धर्म की स्थापना की?

मूल्यपरक प्रश्न (VBQ)

- राजकुमार सिद्धार्थ किस प्रवृत्ति के व्यक्ति थे?

जीवन कौशल (Life SKill)

- जीवन में सदा जीव-जंतुओं से प्यार करना चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए।

उपकार का बदला

उस वर्ष बहुत वर्षा हुई। पूरा केरल राज्य बाढ़ की चपेट में था। हशमत मियाँ की झोंपड़ी बह गई थी। वे अपनी पत्नी के साथ पेड़ की एक मोटी डाल पर चिपके हुए थे। चारों तरफ़ पानी ही पानी था।

तभी दूर से काला-काला कुछ बहता हुआ पेड़ के नीचे आकर रुक गया। पेड़ हिला। कोई और भी पेड़ के मोटे तने से चिपक रहा था। हशमत ने देखा, वह एक छोटा हाथी था। बिलकुल बच्चा।

दो दिन तक पानी नीचे न उतरा। हशमत और सलीमा पेड़ के पत्ते चबाकर अपनी भूख मिटाते रहे। हशमत पेड़ की नरम पत्तियाँ और कोमल डालियाँ तोड़कर हाथी के बच्चे की ओर फेंकता। छोटा हाथी उन्हें सूँड़ में पकड़ गटक लेता और कृतज्ञ भाव से हशमत की ओर देखता।

धीरे-धीरे बाढ़ का पानी कम होता गया। हशमत और सलीमा पेड़ के नीचे उतरे। हाथ-पाँव सीधे किए और एक जगह ऊँची, सूखी ज़मीन देख रुक गए। हाथी का बच्चा भी साथ-साथ ही था। हशमत ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और बोला, "कल्लू मियाँ, अब अपने घर जाओ।"

कल्लू मियाँ ने तो हशमत के साथ रहने का निश्चय कर ही लिया था।

हशमत ने झोंपड़ी बनाई। कल्लू ने बहुत मदद की। इधर-उधर से भारी-भारी लकड़ियाँ ले आता। सूँड़ से मिट्टी की दीवार सीधी कर देता। धीरे-धीरे हशमत और सलीमा की गृहस्थी जमने लगी। गाँव के अन्य लोग ऊँची धरती देख उस पर अपने घर बनाने लगे। अच्छा-खासा गाँव बस गया। खेती-बाड़ी होने लगी।

कुछ वर्ष बीत गए। कल्लू बड़ा हो गया। उधर हशमत के भी बच्चे हो गए। वह इधर-उधर कुछ काम करके सबका पेट भरता। हाथी ज़ंजीर से बँधा रहता। गाँव के बच्चे कल्लू से खेलते। उसके लिए गुड़, चावल, केले आदि ले आते। सलीमा वह सब अपने बच्चों के लिए रख लेती और कल्लू के आगे रूखा-सूखा कुछ डाल देती।

कल्लू हशमत से बहुत प्यार करता था। वह भूखा रहने पर भी हशमत का साथ नहीं छोड़ना चाहता था। हशमत कभी-कभी जंगल से लकड़ियाँ लाने जाता तो कल्लू को साथ ले जाता। उस दिन कल्लू की पिकनिक हो जाती। वह जी भरकर ताल-तलैयों में नहाता और जंगली फल-पत्ते खाता।

एक बार हशमत बीमार पड़ गया। कई दिन तक बुखार नहीं उतरा। सलीमा दो-चार दिन कल्लू को कुछ रूखा-सूखा देती रही पर उससे उसका पेट नहीं भरता था। सलीमा अपने बच्चों को खाना देती तो वह उसे गुस्से से देखता। कल्लू ज़ोर-ज़ोर से चिंघाड़ता।

एक दिन सलीमा ने उसकी ज़ंजीर खोल दी। बोली, "भाग यहाँ से! अपने खाने को तो है नहीं, तुझे कहाँ से खिलाऊँ?"

कल्लू छूटकर सीधा हशमत की चारपाई के पास जा पहुँचा। हशमत सब समझ गया। वह गिरता-पड़ता उसके साथ चल पड़ा। कल्लू ने उसे अपनी सूँड़ से उठाया और मस्तक पर बैठा लिया। वह तेज़ी से एक ओर बढ़ चला।

आगे एक गाँव पड़ा। वहाँ मेला लगा था। बच्चे हाथी देख तालियाँ बजाने लगे। किसी ने हाथी के लिए केलों का एक गुच्छा दिया, तो किसी ने कुछ अन्य सामान।

एक बालक अपने पिता से ज़िद करने लगा, "मैं हाथी की सवारी करूँगा।"

हशमत बोल उठा, "हाँ-हाँ, अवश्य। उसने बच्चे को उठाकर हाथी पर बैठा दिया। दो-चार बच्चे और भी तैयार हो गए। हशमत ने कुछ सोचा और कहा, "एक-एक रुपये में सबको हाथी पर बैठाकर सवारी करवाऊँगा।"

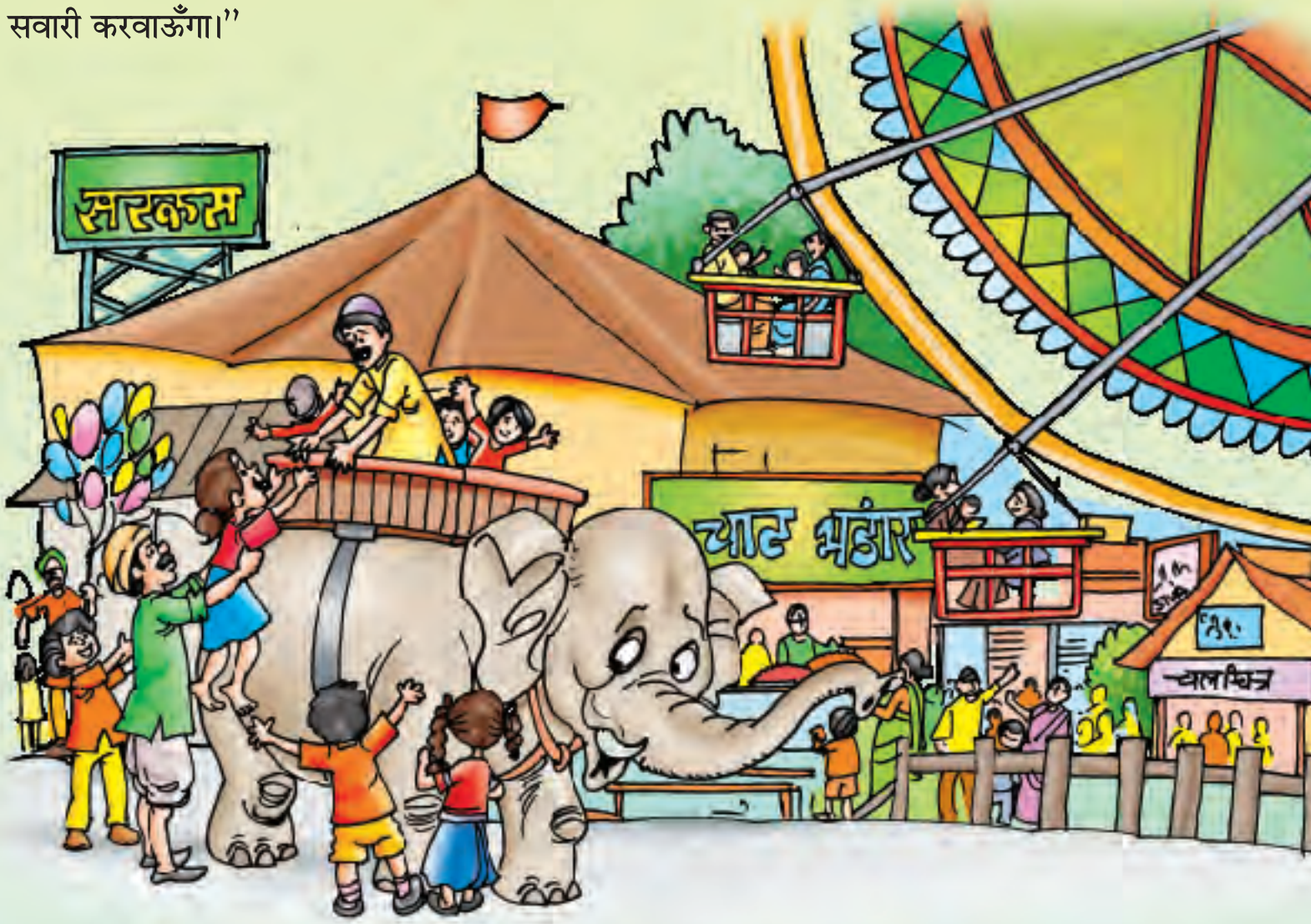

दिनभर यही चलता रहा। उस दिन हशमत और कल्लू ने खूब बढ़िया-बढ़िया खाना खाया। शाम होने को थी। हशमत ने घर जाने की तैयारी की। बची हुई भोजन-सामग्री भी काफ़ी थी। जेब में लगभग पचास रुपये भी थे।

हशमत घर पहुँचा। बच्चे भूख से बेहाल थे। सलीमा परेशान थी। तभी भोजन की सुगंध सबकी नाक तक पहुँची। सभी प्रसन्न हो भोजन खाने लगे। हशमत ने सलीमा से कहा, "पचास रुपये भी लाया हूँ, कुछ दिन तो निकल ही जाएँगे। और जानती हो यह सब अपने कल्लू मियाँ के कारण ही मिला है।"

सलीमा ने प्यार से कल्लू को सहलाया और हाथ की मिठाई उसकी ओर बढ़ा दी।

कल्लू ने अपना बड़ा-सा सिर हिलाया मानो कह रहा हो-तुम खा लो, आज मेरा पेट बहुत भरा है।